वार्षिक 150/- रुपये | मार्च 2024 | वर्ष 26 | अंक 05 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

महा शिवरात्रि
की हार्दिक मंगलकामनाएं

मध्य प्रदेश अंक

हरियाणा में देशी गाय के दूध (ए-2) का
विपणन कार्य का शुभारंभ

मोदी जी की गारंटी

यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी

"हर संकल्प पूरा करने को प्रतिबद्ध" - डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश संकल्प पत्र 2023 में उल्लेखित कुछ प्रमुख संकल्प

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

एमपी के मन में मोदी

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास

D16368/23

मोदी की गारंटी
यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी
मध्यप्रदेश का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा कदम
पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
मध्यप्रदेश में हर ज़िला मुख्यालय पर चिन्हित एक शासकीय महाविद्यालय
का पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नयन, इसके लिए
₹ 460 करोड़ का प्रावधान
महाविद्यालयों में सभी प्रकार के पाठ्यक्रम होंगे उपलब्ध
अब 'डीजी लॉकर' से डिग्री और मार्कशीट की उपलब्धता सुलभ
युवाओं में क्षमताओं का निर्माण कर,
उन्हें कौशलवान और रोज़गार सक्षम
बनाने में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
अहम भूमिका निभाएंगे।
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
D16368/23

सम्पादकीय

हरियाणा में देशी गाय के दूध (ए-२) का विपणन कार्य का शुभारंभ

अन्य सभी राज्यों के लिए अनुकरणीय

सर्वप्रथम मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी खट्टर को हार्दिक साधुवाद। स्मरण रहे, गत माह खट्टर जी द्वारा हरियाणा राज्य में देशी गाय के पैश्चराइज्ड दूध (ए–2) का विपणन के कार्य का शुभारंभ किया गया। मुख्यमंत्री खट्टर जी जिला महेंद्रगढ़ के ग्राम जाटपाली स्थित **हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय** परिसर में चल रही तीन दिवसीय "40वीं राज्य पशुधन प्रदर्शनी – 24" के दूसरे दिन के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हरियाणा राज्य अपने पशुधन के कारण न केवल राष्ट्रीय, अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक विशिष्ट पहचान रखता है। इस अवसर पर खट्टर जी ने लकी ड्रा निकालकर विजेताओं के नामों की घोषणा भी की। खट्टर जी ने यह भी कहा कि इस तरह की प्रदर्शनियों से किसान–गोपालक अपने गोवंश की नस्ल को सुधारने के लिए प्रोत्साहित होता है। साथ ही वह नई–नई तकनीक भी सीखता है।

यथार्थ में मुख्यमंत्री खट्टर जी द्वारा किये गये इस अतिशय महत्वपूर्ण कार्य से गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन में विराट स्तर पर स्पष्टरूप से परिवर्तन देखा जा सकेगा। वास्तव में यह कार्य अन्य सभी राज्यों के लिए अनुकरणीय है, जिससे संपूर्ण देश में देशी गायों की सभी नस्लों का संरक्षण होने के साथ ही स्वाभाविक रूप से उनका संवर्द्धन भी होने लगेगा। सुपरिणामस्वरूप गोवंश आधारित खेती (जैविक कृषि) करने के लिए किसान प्रेरित होंगे और सभी गांव आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर होने लगेंगे। वैसे सभी देशवासी यह भलीभांति समझते हैं कि आत्मनिर्भर गांवों के आधार पर ही राष्ट्र **"आत्मनिर्भर भारत"** अथवा **"विकसित भारत"** बन सकता है, अन्य कोई विकल्प नहीं। यह कहना पूर्णतः समीचीन होगा कि आध्यात्मिक राष्ट्र भारत को पुनः **"विश्वगुरु"** के सम्मान से सुशोभित करने के लिए देशी गोवंश का संरक्षण–संवर्द्धन और गोवंश आधारित खेती अनिवार्य है। ऐसी स्थिति आने पर ही भारतमाता के ललाट पर लगा गो–हत्या के कलंक को भी मिटाया जा सकता है, जो कि अतिशय शर्मनाक है।

सच तो यह है कि सभी देशी नस्ल की गायों का दूध, दूध नहीं अमृत है, क्योंकि यह उत्कृष्ट–अलौकिक गुणों से भरपूर होता है। हर दृष्टि से यह "जन्म देने वाली माँ के दूध" के समान होता है, जिसे अब वैज्ञानिक अनुसंधानों से सिद्ध–प्रमाणित किया जा चुका है। वास्तव में यदि हमारे ऋषि–मुनियों ने आर्ष ग्रंथों में गाय को **"विश्व की माता"** कहा–माना है तो इस आस्था–श्रद्धा का केवल धार्मिक पक्ष ही नहीं है, अपितु देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी गाय–गोवंश का अप्रतिम–अतुलनीय योगदान रहा है। अभी भी गांवों में बसे करोड़ों लोगों के जीवन–यापन में गौ–उत्पाद प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। यही मूल कारण है कि हमारे देश में आदिकाल से ही इसे **"गोधन"** के नाम से पुकारा गया है, जो सर्वश्रेष्ठ–सर्वोपरि था, और अभी भी है। इतना ही नहीं, अब किये गये अनेक वैज्ञानिक शोधों से भी गाय–गोवंश को पर्यावरण हितैषी पाया गया है। ध्यान रहे, सभी प्रकार के प्रदूषणों को नष्ट करने का इससे अच्छा साधन और कोई है ही नहीं। सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करने में भी गोमाता ही समर्थ हैं, अन्य कोई नहीं। अक्षरशः सत्य ही नहीं, ब्रह्म सत्य यह है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड में गाय जैसा कल्याणकारी–दिव्य प्राणी अन्य कोई दूसरा है ही नहीं। इसलिए देश के सभी राज्यों और हर नागरिक का राष्ट्रीय कर्तव्य है कि वे हर तरह से गाय–गोवंश के संरक्षण–संवर्द्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान अनिवार्यतः दें।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 26 अंक-05 मार्च - 2024 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी
उपाध्यक्ष, विहिप

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक :
देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 15/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
यद् गृहे दुखिता गाव: स याति नरकं नरा	06
पंचगव्य एवं कर्क विकार	09
गोबर से गोशालाओं का प्रॉफिट मॉडल	10
'गोशाला' से पवित्र स्थल दुनिया में कहीं भी नहीं...	11
रामराज्य की परिकल्पना को साकार करता म.प्र.	14
गो-तस्करों को संरक्षण देने पर 38 पुलिसकर्मी लाइन हाजिर	16
विहिप के नये पदाधिकारियों की घोषणा	17
सीएम मनोहर लाल ने गोपालकों को दी बड़ी सौगात	17
Are Indigenous Cows Specifically, Stress Busters…?	20
Cow Urine : As a Medicine	22

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त-गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं-

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011-26174732

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

यद् गृहे दुखिता गावः स याति नरकं नरा

शीर्षकोपदेश का भावार्थ यह है कि जिस घर में गोमाता दुःख का अनुभव गृह स्वामी के आलस्य और अश्रद्धा के कारण करती है उस घर के लोग नर्क के समान कष्ट भोगते हैं। उपरोक्त चेतावनी युक्त उपदेश मन्त्र हम मनुष्यों के लिये महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिये कि गोमाता की सेवा का प्रतिफल उपरोक्त उपदेश में परोक्षरूप से निहित है, जो सामान्य व्यक्ति भी जान–समझ जाता है। इसीलिये हमारे पूर्वज गोवंश की सेवा भली–भाँति पालन – पोषण तथा रक्षा करते हुए करते रहे हैं, जिससे उसे किंचित भी कष्ट न होने पाये। पीढ़ी–दर–पीढ़ी इस उपदेश का पालन किया जाता रहा है। इसी कारण हम पर गोमाता की ऐसी महत् कृपा रही है कि हमारा देश **हिरण्यगर्भा देश** के रूप में प्रसिद्ध होकर विश्वगुरू के पद पर प्रतिष्ठित हुआ था।

यवन लुटेरों की वीभत्स लूट के पश्चात् भी बाबर जैसा दुर्दान्त आक्रान्ता हमारे देश को सोने की चिड़िया कहता था। उसका यह कथन पूर्वकाल में इसे हिरण्यगर्भा देश के रूप में होना सिद्ध करता है। यह सम्पन्नता गोवंश की कृपा स्वरूप धरती और प्रकृति के आशीर्वाद से ही हो सकी थी। वस्तुतः धरती, प्रकृति और गो तीनों ही समस्त प्राणियों की मातायें हैं। धरती के गर्भाशय में प्रकृति ने इन्हें पुष्ट किया तब इनकी उत्पत्ति हुई। उत्पन्न होने के पश्चात गोमाता ने अपनी शक्ति सम्पदा से इनका पोषण करते हुए जीवन–यापन का आधार दिया। विशेषरूप से मनुष्यों को कृषि कर्म हेतु अपनी शक्ति (वृषभ) तथा सम्पदा (दुग्ध, गोमय तथा मूत्रादि) सुलभ करा कर वनस्पतियों का पोषण गोमय तथा मूत्रादि से तथा खगों–मृगों का पोषण अन्न, कीट, माँस तथा वनस्पतियों से आदिकाल से होता आ रहा है। मनुष्य को ईश्वर ने गोवंश की भांति ही शाकाहारी रूप में रचा है। अन्तर इतना है कि जैसे माता सन्तान को अच्छा भोजन देकर स्वयं रूखा–सूखा खाती है वैसे ही गोवंश अन्न हमें खिलाकर स्वयं घास–पात एवं भूसा–पुआल आदि खाकर निर्वाह कर लेता है। **''गो में माता वृषभः पिता में''** मन्त्रोपदेश का आधार यही है।

जब तक हमारे घरों में हमारे द्वारा रक्षित हमारा गोवंश सुखी था तब

तक हम थोड़ी–सी अभावग्रस्तता में भी आनन्द का अनुभव करते थे। यहाँ तक कि खग–मृगादि प्राणी भी दुखी नहीं थे। कारण यह था कि हम अपनी मातृत्रयी (धरती, प्रकृति और गौ) का समुचित दोहन ही करते थे। हमारे द्वारा समुचित दोहन के कारण हमारी मातृत्रयी वैसे ही आनन्द की अनुभूति करती थीं जैसा आनन्द जननी शिशु को पयपान कराते हुए करती हैं। नृवंश की तीन श्रेणियाँ हैं, सुर, असुर और मानव; आर्ष ग्रन्थों में इन्हें देवता, राक्षस और मनुष्य कहा गया है। विवाह हेतु वर–कन्या के गुणों के मिलान में इनका उल्लेख है। सुर वे हैं जो सदैव लोकमंगल हेतु प्रयासरत रहते हैं, जैसे हमारे पूर्वज ऋषि जिन्होंने सृष्टि रचना का हेतु गहन तप करते हुए रचयिता का दर्शन उसकी रचना के अंग प्रत्यंग में करके उसे साक्षात्कार द्वारा जाना और संसार को बताया। उन्होंने बताया कि विधाता का कौतुक मात्र है यह अखिल ब्रह्माण्डीय सृष्टि और मनुष्य इस रचना की अन्तिम ऐसी कृति है जिसे धरती और प्रकृति की सहायक सहचरी की सेवा–रक्षा पालन–पोषण करते हुए उसकी शक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग करते हुए कृषि तथा कृषि आधारित व्यवसायों द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने हेतु ही रचा गया है। हमारे पूर्वज ऋषि वस्तुतः सुर ही थे और इस आचार का पालन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति सुर की श्रेणी में ही प्रतिष्ठित है।

असुर वे हैं जो तामसी प्रवृत्ति के दुष्चक्र में पूर्णरूपेण जकड़े होने के कारण सदैव प्रकृति विरुद्ध कार्य करते रहते हैं और जिन्हें किंचित भी पश्चाताप नहीं होता। दानव–दैत्य–राक्षसादि इनके प्रकार हैं।

आज के संसार में इनका बहुमत है और धीरे–धीरे हमारा देश भी इस आसुरी प्रवृत्ति के आकर्षक वैलासिक जाल में फँसता जा रहा है। आकर्षक वैलासिक जाल इसका ऐसा लुभावना अस्त्र है जिससे बच पाना सामान्य मनुष्य के लिये अतिकठिन है। इस जाल में फँसकर मनुष्य अपने चरित्र की हत्या अपने ही हाथों कर देता है। पहले विचार भ्रष्ट होता है फिर आचार भ्रष्ट होकर मनुष्य चरित्रहीन हो जाता है और प्रत्येक चरित्रहीन व्यक्ति असुर ही माना गया है। ये असुर गोवंश के सबसे घातक शत्रु हैं जो निरन्तर मनुष्यों को विलासी बनाते हुए उन्हें अपने चरित्र का गला अपने ही हाथों से घोंटने हेतु प्रोत्साहित कर अपनी कोटि में सम्मिलित करने का कार्य करते हैं।

कृमि, कीट, पतंगे और पशु–पक्षी सभी ईश्वर की सन्तान हैं और मनुष्य से ज्येष्ठ हैं। मनुष्य की रचना सबसे अन्त में धरती, प्रकृति की सहचरी गोमाता के पालन, पोषण, रक्षाण और सेवा करते हुए ही उसके सहारे जीवनयापन करने हेतु ही की गयी है। इन सबकी रचना किये बिना मनुष्य की रचना असम्भव थी। अतः गोवंश सहित वनस्पतियों के बिना मनुष्य का अस्तित्व बचना भी असम्भव है।

मनुष्य नृवंश की वह श्रेणी है जिसमें कर्म की प्रधानता है। यह ज्ञान उसे घर और गुरु से मिलता है। उदाहरण स्वरूप कृषक के पुत्रों को कृषि कर्म का ज्ञान घर से ही मिलता है। पिता–दादा या चाचा आदि उसके गुरु हैं, जो उसे जुताई–बुआई आदि के साथ ही गोपालन की शिक्षा देते हैं। वह कृषि कर्म को अपना धर्म (कर्तव्य) मानकर श्रद्धापूर्वक करता है। गोवंश को अपने माता–पिता के समान आदरणीय मानने की शिक्षा वह

अपने माता–पिता से ही पाता है। जुताई के पश्चात् बैलों की जाँघों पर हाथ फेरकर उनकी थकान दूर करना वह अपने पिता–दादा या चाचा को ऐसा करते देखकर स्वयमेव सीख जाता है।

पहले ही बताया जा चुका है कि असुर मनुष्यों को अपनी कोटि में लाने के लिये कैसे और क्या प्रयत्न करते हैं। ऐसे ही प्रयत्नों के कारण हमारे देश में गोवंश पर भारी संकट छाया है। ऐसा भीषण दुःखद और भयावह संकट कि हमारा गोवंश आज उपेक्षित–तिरस्कृत, कलपता –सिसकता ग्रामों, नगरों में कूड़ा – कचरा खाता सड़कों पर चोटिल हो तड़प–तड़पकर मरता हुआ विलुप्ति की कगार पर वैसे ही पहुँच रहा है जैसे गिद्ध–गौरैया और बया आदि पक्षी–प्रजातियाँ पहुँच गयी हैं।

आगामी पाँच जून को प्रतिवर्ष की भाँति पर्यावरण दिवस मनाने का स्वांग विश्व भर के बुद्धिजीवी रचेंगे–करेंगे। वातानुकूलित यानों में बैठकर अपने भाग की गर्मी पथिकों पर उड़ेलते–झोंकते हुए व्याख्यान देने जाना स्वांग नहीं तो क्या है? दुखद यह कि हमारे देश का कोई भी पर्यावरणविद् गोवंश की उपेक्षा–तिरस्कार के कारण कृषि से होने वाले प्रदूषण की चर्चा नहीं करेगा। बुद्धिजीवी विद्वान तो कर ही नहीं सकता और आमंत्रित तो बुद्धिजीवी ही किये जाते हैं। बेचारे बुद्धिशील सरस्वती भक्त होने के कारण लक्ष्मीचन्दों द्वारा सदैव उपेक्षित ही रहते हैं। कोई भी बुद्धिजीवी नहीं कहेगा कि हमारा गोवंश पर्यावरण के पाँचों अंगों को पुष्ट करते रहने हेतु ही सृजित हुआ है। बुद्धिजीवी सुविधाभोगी होते हैं। अपने भाग की गर्मी दूसरों पर उड़ेलकर प्रदूषण फैलाने वाले बुद्धिजीवी गोवंश के दुःख पर बोलकर क्या अपनी सुख–सुविधा को लात मार सकते हैं? यदि इनमें इतना साहस–धैर्य या त्याग भाव होता तो यह बुद्धिजीवी नहीं बुद्धिशील माने जाते और बुद्धिशील कभी भी धरती–प्रकृति और गाय के दुःखों को अनदेखा नहीं करता, अपितु क्षमता भर उसे दूर करने का प्रयास करता है।

लेखक ऐसे समस्त बुद्धिजीवियों से निवेदन करना चाहता है जिनकी पैठ शासन–प्रशासन तक है, वे अपनी बुद्धि की शुद्धि करने हेतु शासन–प्रशासन को गोवंश की अरबों अश्व मानक शक्ति और करोड़ों रुपये की सम्पदा का सदुपयोग करने की सलाह शासन–प्रशासन को देकर गोवंश को विनाश की खाई में ढकेले जाने से बचाकर अपनी भावी सन्ततियों के जीवन को भी मंगलमय बनायें; जिनके लिये मंगल ग्रह पर भवन बनाकर उन्हें सुखी रखने हेतु न जाने कितने पापड़ बेलकर शोषण की आँच पर सैंक रहे हैं।

मत भूलें! कृमि, कीट, पतंगे और पशु–पक्षी सभी ईश्वर की सन्तान हैं और मनुष्य से ज्येष्ठ हैं। मनुष्य की रचना सबसे अन्त में धरती, प्रकृति की सहचरी गोमाता के पालन, पोषण, रक्षण और सेवा करते हुए ही उसके सहारे जीवनयापन करने हेतु ही की गयी है। इन सबकी रचना किये बिना मनुष्य की रचना असम्भव थी। अतः गोवंश सहित वनस्पतियों के बिना मनुष्य का अस्तित्व बचना भी असम्भव है।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य एवं कर्क विकार

भारत का सांस्कृतिक स्तर प्रतिदिन गिरता जा रहा है क्या, यह प्रश्न नशे में धुत युवा पीढ़ी को देखते मन में उठ रहा है। माता–पिता अपने बच्चे अधिक–से–अधिक पढ़ सकें, उच्च शिक्षित होने के लिए उन्हें जरूरत पड़ने पर बाहरगांव – विदेश भेजते हैं। उस की व्यवस्था के लिए उन्हें चाहे आधे पेट क्यों न रहना पड़े, वे सब सह लेते हैं। भारत के बड़े बड़े शहरों में हॉस्टल में रहने वाले विद्यार्थियों को अलग–अलग नशा करना आसान होता है। अपने घरों में रहकर पढ़ने वाले बच्चों में भी नशा का उपयोग प्रतिदिन बढ़ने का प्रमाण ध्यान में आया है। चरस–गांजा, तंबाखू–सिगरेट, दारू आदि का सेवन लड़के–लड़कियों में बढ़ रहा है, ऐसा ध्यान में आ रहा है। नशीले पदार्थों का पहला संपर्क तो मुख में, नासा में, श्वास नली, अन्न नली से होता है। हमारे शरीर के संपर्क में आते ही कोशिका अपना कार्य करती है। त्वचा के बाहरी सतह पर भी हम कोई क्रीम लगाते हैं तो वह अंदर प्रवेश करती है। अगर हम मुख में खर्रा, तंबाखू रखते हैं, तब मुख की त्वचा उसका प्रतिकार करती है। शरीर के साथ कोई भी पदार्थ जो शरीर को तकलीफ देता है, उसकी प्रतिक्रिया शरीर देता है। तब हम उसे allergy कहते हैं। मुख के अंदर तंबाखू, खर्रा जब हम पकड़ कर रखते हैं तो वहां की त्वचा में कड़ापन आने लगता है। वह सफेद दिखने लगती है। मुख का पूर्ण रूप से खुलना धीरे–धीरे कम होने लगता है। उस समय हम ज्यादा देर तक अंधेरे में ही रहते हैं। जब कहीं गठान ध्यान में आती है, तब हम अंदर से ही घबराते हैं और तुरंत डॉक्टर के पास जाने से कतराते हैं। ऐसे ही व्याधि अपना पांव पक्का करती जाती है, लेकिन हमारा जल्दी डॉक्टर के पास जाना अधिक लाभदायक होता है। उस समय आपकी अवस्था के अनुरूप डॉक्टर

विभिन्न जांच कराने के लिए कहते हैं। हम इन नशीले पदार्थों से जितना दूर रहें उतना ही अधिक हम स्वस्थ रह सकते हैं। यह चिकित्सा की अवस्था आने के पूर्व ही अगर हम नशा से मुक्ति पाकर पंचगव्य का उपयोग करें तो कम–से–कम व्याधि बढ़ने से रुकने का प्रतिशत बढ़ सकता है। यह करते समय भी चिकित्सक की सलाह अत्यावश्यक रहती है।

प्रतिवर्ष **मुख–गले के कर्कविकार** से पीड़ित रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह बीमारी एक बार आने के उपरान्त ऑपरेशन लाइट या कीमोथेअरपी कराने के उपरान्त भी पूर्णतः खत्म होगी, यह जरूरी नहीं है। कुछ लोगों में सब करने के उपरान्त भी यह वापस आती दिखाई दे रही है। भारत में यह अनुपात बढ़ रहा है। तीन से पांच साल में ही अनेक रुग्ण पुनः पीड़ित होते दिखते हैं। अतः हम सबके घरों में नशीले पदार्थ कभी भी नहीं आयें, इसका ध्यान रखने की आवश्यकता है। साथ ही भारतीय वंश की स्वस्थ गाय के गोबर से बनने वाला कामधेनु गोमय भस्म दंतमंजन का उपयोग हम सब के घरों में नियमित होने लगे तो निश्चितरूप से उसका लाभ हम सबको मिलेगा।

प्रति दिन करने के लिए सुझाव

- सुबह उठकर एवम् रात्रि में कामधेनु गोमय भस्म दंतमंजन का नियमित उपयोग करें।
- तीन से पांच मिनट तक मंजन मुंह में रहने दें, तदुपरान्त मुख साफ करें।
- कामधेनु गोमूत्र अर्क 5–10 मि.ली. लेकर उसमें 100 मि.ली. पानी मिलाकर मुख में घुमाते हुए निगलें। सुबह खाली पेट एवम् शाम को सेवन करें।
- पंचगव्य घृत 1 चम्मच सुबह–शाम भोजन में सेवन करें।
- घर में पिसी हुई हल्दी का चूर्ण एवम् शहद का पेस्ट बनाकर मुख के अंदर लगाएं।
- त्रिफला चूर्ण एक चम्मच लेकर एक ग्लास पानी में उबालकर थोड़ा ठंडा होने देवें। उसमें 1 चम्मच कामधेनु गोमूत्र अर्क मिलाकर सुबह–शाम मुख में धारण कर थूँक देवें।

गोबर से गोशालाओं का प्रॉफिट मॉडल

भोपाल। प्रदेश की गोशालाओं को बेहतर संचालन के साथ आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। इसके लिए गोबर, गोमूत्र का उपयोग किया जायेगा। ऐसी व्यवस्था होगी कि गाय सड़कों पर न दिखे। उन्हें गोशालायें या सुरक्षित स्थान मिले। इसके लिए कार्य योजना बनेगी। इसकी जिम्मेदारी पशुपालन विभाग को सौंपी जायेगी। इस संदर्भ में विभाग इसी महीने बैठक करेगा। यह निर्णय कैबिनेट की बैठक में लिया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने कहा कि गोशालाओं के लिए राशि और मानदेय वृद्धि का निर्णय लिया जाएगा। यदि गोमाता की मृत्यु होती है तो सम्मानजनक दाह संस्कार की व्यवस्था होनी चाहिए, इस कार्य के लिए ग्राम पंचायत, नगर परिषद और नगर निगम का दायित्व तय किया जाएगा। गोमाता के अवशेष अपमानित न हों, इसके लिए समाधि या दाह संस्कार के लिए बजट आवंटन किया जाएगा। इस विषय में मंत्रियों ने कहा कि सामाजिक संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाए। पशुपालन मंत्री लखन पटेल जी ने कहा कि वे गोशाला संचालकों की बैठक में सुझाव लेंगे।

पूजा पाराशर, स्वतंत्र लेखिका

'गोशाला' से पवित्र स्थल दुनिया में कहीं भी नहीं...

महर्षि वशिष्ठ जी ने कहा है – **"गावः स्वस्त्ययनं महत्"** अर्थात् 'गो मंगल का परम् निधान है।' जहाँ गोमाता का पालन–पोषण भली–भाँति नहीं होता, वहाँ अमंगल दशा देखने को मिलती है और जहाँ गोमाता की पूजा होती है, वहाँ संपन्नता व आनंद की वर्षा होती है। यही कारण था कि पूर्वकाल में राजा गोधन को ही सर्वश्रेष्ठ मानते थे; गोपूजा, गोदान की प्रथा प्रचलित थी। समय के साथ भारतीय संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ आचरण 'गोसेवा' लुप्त होती गई और जिस देश में दूध की नदियाँ बहती थीं, वहाँ गरीबी बढ़ती गई। भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्य विनोबा भावे जी ने कहा है – **"हिंदुस्तानी सभ्यता का नाम ही 'गोसेवा' है।"**

महानगर चेन्नई के बीचों–बीच कोलाहल, भीड़ और भागम–भाग भरे जीवन में एक ऐसा स्थान जहाँ शांति, शुद्धता और संयम प्राप्त हो जाए तो यह आश्चर्य होगा। ऐसा ही स्थान है चेन्नई के पश्चिम मांबलम् में स्थित **'गोः संरक्षण शाला'**, जो अपने दाएँ भाग में **'श्री कांची कामकोटी पीठम्'** (देवी का मंदिर) और बाएँ भाग में **'काशी विश्वनाथ मंदिर'** को बसाती है या यह कहें कि स्वयं शिव और शक्ति एक होकर गोशाला के रूप में अपने भक्तों पर प्रत्यक्ष अनुकंपा कर रहे हैं।

लिखित साक्ष्यों के अनुसार, 'सन् 1962 में कांची परमाचार्य श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती जी ने जब चेन्नई का भ्रमण किया तब वे इसी स्थान पर ठहरे। उन्होंने यहाँ जप–हवन किया। उस समय यह स्थान जंगल के समान प्रतीत होता था। कुछ लोगों ने मिलकर इस स्थान को ठहरने योग्य बनाया; तब श्री परमाचार्य ने यहाँ रहने की इच्छा रखी, जिसका कारण कई वर्षों बाद पता चला। उस समय सभी घरों में गोमाता का पालन–पोषण किया

जाता था। दुधारू गाय के सूख जाने के पश्चात् भी उनकी देखभाल अच्छे से की जाती थी, परंतु समय के साथ यह प्रथा, सेवा–भावना लुप्त होती गई। कोई भी बूढ़ी गाय या दूध न देने वाली गाय को नहीं रखना चाहता था, इसलिए उनकी हालत समय के साथ बिगड़ती गई। श्री परमाचार्य ने अपनी दिव्यदृष्टि द्वारा इस बिगड़ती स्थिति का पूर्वाभास कर लिया था, अतः उन्होंने अपने भक्तों से इस स्थान को खरीदने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि यहाँ एक गोशाला की स्थापना की जानी चाहिए। उस समय के न्यायमूर्ति कृष्णस्वामी रेड्डी, तमिलनाडु के राज्यपाल प्रभुदास पटवारी और श्री परमाचार्य के भक्तों के प्रयासों द्वारा सन् 1978 में 'माट्टु पोंगल' के दिन (तमिलनाडु का मुख्य त्योहार **'पोंगल'** (मकर संक्रांति) के तीसरे दिन गोवंश की पूजा की जाती है) श्री परमाचार्य द्वारा दी गई 4 गायों के साथ यह शुभ व श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हुआ। इस प्रकार, परमाचार्य श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती जी के आशीर्वाद एवं कृपा से 'गोः संरक्षण साला' (गोशाला) के माध्यम द्वारा आज भी गोसंरक्षण व गोसंवर्धन कार्य गतिशील है।'

पिछले 44 वर्षों से गोशाला ने एक ऐसा आदर्श स्थापित किया है जिसका अनुसरण व अनुकरण पूरे तमिलनाडु में किया जा रहा है। यहाँ से उपहार स्वरूप प्राप्त गायों द्वारा लगभग 40 से अधिक गोशालाओं को स्थापित गया किया गया है। गोशाला में सीमित स्थान होने के कारण गोओं को सैकड़ों की संख्या में उचित देखभाल के लिए विभिन्न स्थानों पर भेजा गया है और साथ ही उनके संवर्धन हेतु नई गोशालाओं को भी स्थापित किया गया है। पश्चिम मांबलम्, चेन्नई स्थित गोशाला में लगभग 150 गायें हैं। यहाँ के कई मंदिरों में इसी गोशाला से प्राप्त गौओं को पूजा और देखभाल के लिए रखा जा रहा है। कांचीपुरम के पास अयंगर कुलम् गाँव में 60 गायें, कलवई के पास सुरैयूर में 80 गायें, चेन्नई के केलंबक्कम् पास मांबाक्कम् में 50, पेरियपालयम् के पास 15 गायें, करूर ताल्लुक में तलापालयम् गाँव में 25, दिंडीवनम् के पास कीड़पसार गाँव में 10 और ऊतकोटई के पास देवंदवाक्कम् गाँव में 90 गायों सहित कई गोशालाओं का विस्तार 'गोः संरक्षण साला' के माध्यम से किया जा रहा है, जो श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती ट्रस्ट द्वारा प्रबंधित है।

चेन्नई शहर के बीचों–बीच स्थित गोशाला बहुत ही सुंदर और मन को शांति प्रदान करती है।

गायों को समय पर पौष्टिक आहार, अगाती कीरई (पालक/ मैथी की भाँति एक प्रकार का हरा साग) देने की उचित व्यवस्था है। गोशाला में दर्शन हेतु आने वाला प्रत्येक भक्त गोमाता की प्रदक्षिणा करता है, उन्हें अगाती कीरई खिलाता है। बीमार व कमजोर गायों के लिए अलग से सुविधा प्रदान की जाती है। चिकित्सा की भी यहाँ व्यवस्था की गई है। प्रत्येक शुक्रवार को 6:30 बजे से गोपूजा उत्सव मनाया जाता है, जिसमें 100 से भी अधिक लोग भाग लेते हैं। प्रत्येक रविवार को गोशाला में भव्य कार्यक्रम होते हैं, जैसे – भजन–कीर्तन, तुलसी आरती, संध्या आरती, नरसिंह आरती, भगवतगीता की कक्षा एवं गोपूजा की जाती है, साथ ही अंत में प्रसाद दिया जाता है। 'गोः संरक्षण साला' मात्र गोशाला नहीं अपितु मंदिर की भाँति ही यहाँ दैनिक नियमों का पालन किया जाता है। गोशाला में प्रतिदिन जप–हवन किया जाता है। प्रतिदिन गोमाता की आरती व निम्न श्लोक द्वारा आराधना की जाती है –

"सर्वकामदुधे देवी सर्वतीर्थाभिषेचनि।
पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवी तुभ्यं नमोऽस्तु ते।।"

(हे सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली दूध की दाता, सभी तीर्थों में स्नान करने का प्रभाव देने वाली; हे परम पवित्र कामधेनु, हे देवी, आपको मेरा नमस्कार है)।

गोशाला में प्रवेश करने वाले गोभक्तों को जूते–चप्पल बाहर ही उतारने होते हैं क्योंकि यह स्थान मंदिर से भी ज़्यादा पुण्यतीर्थ कहा जाता है। स्वयं श्री कांची परमाचार्य द्वारा लिखित **'देवत्तिन् कुरल'** अर्थात् **'भगवान का स्वर'** में वे कहते हैं – 'स्वयं (गोमाता) के अंदर उपस्थित द्रव्य; जिससे यज्ञ की रक्षा होती है। यदि गोमाता वह नहीं भी दे तो उनकी उपस्थित ही इतनी दिव्य है कि उसमें मंत्रों की रक्षा करने की शक्ति है, इसलिए जो गोशाला में जाप करते हैं; उन मंत्रों का प्रभाव करोड़ों बार से ज़्यादा मिलता है। ऐसी गोशाला से पवित्र स्थल दुनिया में कहीं भी नहीं है, क्योंकि गोमाता के अंदर 33 कोटी देवी–देवताओं का वास है। सारे पुण्यतीर्थ गाय के अंदर हैं। हमारे मंदिरों में भी कई देवताओं की मूर्ति स्थापित कर वह स्थान तीर्थस्थल बन जाता है, लेकिन गोमाता में सभी देवताओं का वास है; सारे पुण्यतीर्थ उसमें ही स्थित हैं, अतः गो एक सचल मंदिर है एवं वह सर्वदेवताओं का भी एक महत्वपूर्ण मंदिर है।'(अनूदित)

महान संत श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती जी ने मात्र 4 गायों से मानव जाति की रक्षा हेतु एक ऐसा बीज बोया जो आज वटवृक्ष के समान चारों दिशाओं में अपनी अनुकंपा बिखेर रहा है एवं आज की पीढ़ी का मार्गदर्शन भी कर रहा है। साथ में यह संदेश भी दे रहा है कि आने वाली पीढ़ी किस प्रकार अपनी संस्कृति, सभ्यता और सदाचार को अपनाते हुए अपने जीवन को सार्थक करने में सफल हो सकती है।

"गावः प्रतिष्ठा भूतानां
गावः स्वस्त्ययनं महत्।
गावो भूतं च भव्य च
गावः पुष्टिः सनातनी।।"

अर्थात् (गो मनुष्य के जीवन का अवलंब है, गो कल्याण का परम निधान है; पहले के लोगों का ऐश्वर्य गो पर अवलंबित था, आगे की उन्नति भी गो पर अवलंबित है, गो ही सब समय पुष्टि का साधन है)।

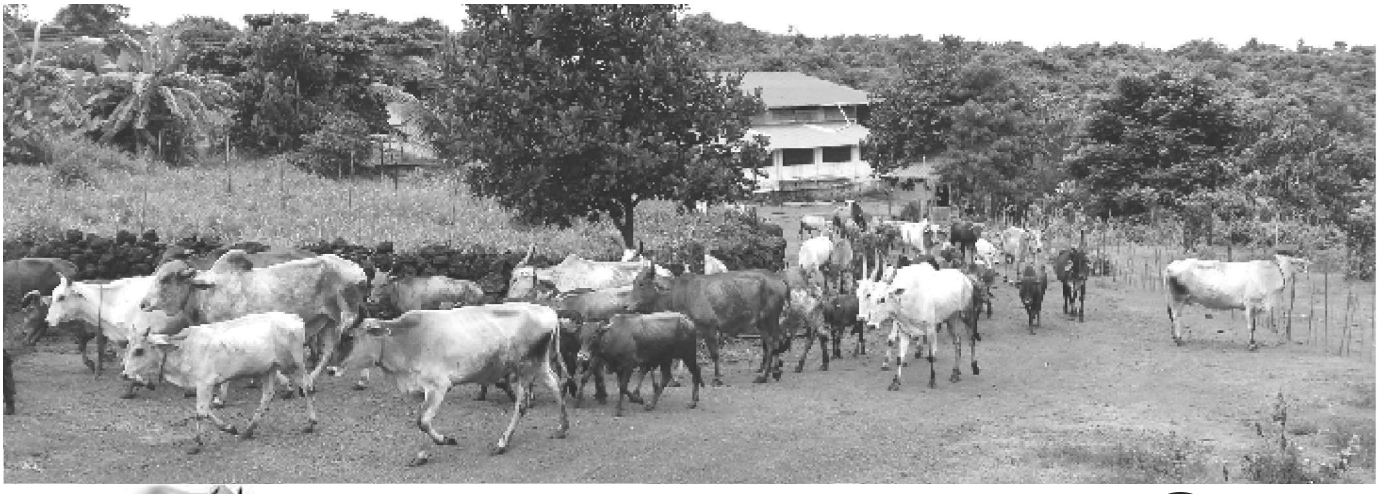

रामराज्य की परिकल्पना को साकार करता म.प्र.

मध्यप्रदेश में रामराज्य और सुशासन की अवधारणा को साकार करने के लिये प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रही है। सुशासन ही रामराज्य का स्वरूप है। राज्य सरकार ने 60 दिनों की अल्पावधि में जन कल्याण के लिये जो निर्णय लिये हैं वे रामराज्य की परिकल्पना के अनुरूप हैं। इस निर्णय–प्रक्रिया में सहभागी बनना सभी के लिये सौभाग्य की बात है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हमारे रोम–रोम में बसे हैं। वे हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हर कदम पर साथ हैं। रामराज्य की मूल अवधारणा में निहित शासन, त्वरित न्याय, खुशहाल और बेहतर समाज तथा जनभागीदारी शामिल है। चित्रकूट एवं ओरछा सहित प्रदेश में संपूर्ण राम वन गमन पथ के सर्वांगीण विकास के लिये कार्य प्रारंभ हो गया है। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के चरण जिन–जिन स्थानों पर पड़े हैं उन्हें तीर्थ स्थलों के रूप में विकसित करने का संकल्प भी सरकार ने लिया है। सुशासन में समाज के सभी अंगों की सहभागिता जरूरी है। सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए प्रदेश के शूरवीरों के जीवन और राष्ट्र के प्रति बलिदान की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने के साथ भावी पीढ़ी को प्रेरित करने के लिये **भारत वीर संग्रहालय** की स्थापना का भी निर्णय लिया है।

भगवान श्रीराम की अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा से सभी गौरवान्वित हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में

D16368/23

दृढ़ संकल्पित होकर राम राज्य और सुशासन की अवधारणा को धर्म, संस्कृति और विकास के बेहतर समन्वय के रूप में आगामी महाशिवरात्रि से गुड़ीपड़वा के मध्य उज्जैन में भव्य विक्रम व्यापार और उद्योग मेले का आयोजन होने जा रहा है। यह प्रदेश के धार्मिक, सांस्कृति, आध्यात्मिक और आर्थिक विकास का प्रतिबिंब होगा। इसमें विक्रम वैदिक घड़ी, विक्रम पंचांग के लोकार्पण के साथ सम्राट विक्रमादित्य अलंकरण समारोह भी आयोजित किया जाएगा।

धर्मप्रेमी जनता को बाबा महाकाल की नगरी के लिये हवाई यात्रा की सुविधा भी मिलेगी। प्रदेश में श्री केदारनाथ धाम की तरह इंदौर से उज्जैन एवं ओंकारेश्वर (ममलेश्वर) ज्योतिर्लिंग, जबलपुर से चित्रकूट, ग्वालियर से ओरछा एवं पीताम्बरा पीठ के लिये हेलीकॉप्टर सेवाएं प्रारंभ की जाएंगी।

मध्यप्रदेश आध्यत्मिक और प्रभु श्रीराम के प्रति असीम श्रद्धा से सुशासित है। प्रदेशवासियों ने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिकता की खुशियों को प्रभात फेरियों, कलश यात्राओं तथा विशेष स्वच्छता अभियान और दीपदान की रोशनी से जगमग कर अभिव्यक्त किया। लोकाचार और व्यवहार में भी वह अनंत खुशियां दिखाई दीं। अयोध्या और हरिद्वार की तर्ज पर मध्यप्रदेश के घाटों को विकसित करने का निर्णय लिया गया है। पवित्र नगरी चित्रकूट को विश्व स्तरीय धार्मिक एवं पर्यटन स्थल के स्वरूप में विकसित करने और मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना से प्रदेश के वरिष्ठ नागरिकों को हवाई और रेल मार्ग से भगवान श्रीराम के दर्शन के लिए अयोध्या की यात्रा का संकल्प जनता की खुशहाली का प्रतीक है।

सुशासन के लिये मुख्यमंत्री डॉ. यादव की सोच स्पष्ट है कि समाज के सभी वर्गों की सहभागिता के साथ सबके विकास को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ें। प्रदेश में प्रत्येक स्तर पर त्वरित पारदर्शी उत्तरदायी और संवेदनशील शासन व्यवस्था को सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाये जा रहे हैं। प्रत्येक संभाग में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रत्येक संभाग में एम्स की तर्ज पर मध्यप्रदेश इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस मेडिकल साइंस स्थापित करने की ओर कदम बढ़ाए जा रहे है।

सुशासन का समग्र परिणाम जवाबदेही, पारदर्शिता, भागीदारी, प्रभावशीलता और दक्षता में दिखाई पड़ता है। नियम स्पष्ट और सरल हों जिसे आम आदमी आसानी से समझ सके, उसे कोई परेशानी न हो। प्रदेश के बहुसंख्यक किसानों की बेहतरी के लिए मुख्यमंत्री सिंचाई टास्क फोर्स का गठन तथा प्राकृतिक खेती को समृद्ध और आधुनिक बनाएं जाने की कोशिशें, मध्यप्रदेश में दाल मिशन की शुरुआत, बागवानी के क्षेत्रफल को 20 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 30 लाख हेक्टेयर किया जाने के निर्णय सुशासन की दिशा में बेहद सकारात्मक संदेश है।

सतत् विकास के कुछ दूरदर्शी तथा व्यापक उद्देश्य है जो भाषा, वर्ग, जाति तथा क्षेत्रीय पाबंदियों से परे है। समता तथा न्याय के साथ अधिकांश लोगों का जीवन स्तर पोषित हो और मुक्त, समावेशीय तथा भागीदारी निर्णय प्रक्रिया हो, यही सुशासित प्रदेश चाहता है। राम राज्य की अवधारणा पर आधारित लोककल्याण के कार्य मध्यप्रदेश के करोड़ों लोगों की बेहतरी का मार्ग प्रशस्त कर रहे है।

D16368/23

गो-तस्करों को संरक्षण देने पर 38 पुलिसकर्मी लाइन हाजिर

रेवाड़ी (हरियाणा)। राजस्थान में भाजपा सरकार आते ही गो–तस्करों के साथ–साथ भ्रष्टाचारी अधिकारियों की कलई भी खुलने लगी है। यहां से राजस्थान ही नहीं बल्कि हरियाणा और दिल्ली तक गो मांस की होम डिलीवरी हो रही थी। खैरथल तिजारा जिले में पुलिस की मिलीभगत से यहां बड़े पैमाने पर गो मांस की तस्करी की जा रही थी। मामला सामने आने के बाद जयपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक उमेशचंद दत्ता मौके पर पहुंचे। उन्होंने तस्करों को संरक्षण देने के आरोप में किशनगढ़बास थाने के एसएचओ दिनेश मीणा समेत 38 पुलिसकर्मियों को लाइन हाजिर कर दिया है, जबकि चार को निलंबित किया गया है। इन चार पुलिसकर्मियों पर आरोप है कि इन्हें पूरे मामले की जानकारी थी, लेकिन इन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की। थाने के सभी पुलिसकर्मियों के लाइन हाजिर होने के बाद संचालन के लिए तुरंत प्रभाव से नए स्टाफ को वहां भेजा गया है। फिलहाल मामले की जांच कोटपूतली बहरोड एसपी नेमीचंद को सौंपी गई है। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए मामले में करीब 20 से 25 आरोपितों पर केस दर्ज कर लिया है। पुलिस ने 25 युवकों को हिरासत में भी लिया है। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री व अलवर शहर के विधायक संजय शर्मा ने गत माह मौके पर जाकर स्थिति का जायजा लिया।

वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा के दौरे के बाद प्रशासन हरकत में आया है। अपराधियों के सरकारी जमीन पर स्थित करीब 20 से अधिक घरों पर बुलडोजर चलाकर उन्हें ध्वस्त किया जा रहा है। बता दें कि यहां कई लोगों ने सरकारी भूमि पर कब्जा कर बिजली कनेक्शन ले रखा है और खेती कर रहे हैं। बुलडोजर की कार्रवाई के बाद सरकारी भूमि को मुक्त करवाया जा रहा है। मंत्री संजय शर्मा ने इन अवैध घरों में बिजली कनेक्शन देने पर विद्युत निगम के अधिकारियों को मौके पर बुलाकर फटकार लगाई।

50 गांवों में घूमकर बेचते थे गोवंशी मांस

किशनगढ़बास थाना क्षेत्र के रुंध और गिदावड़ा व बिरंगपुर के जंगलों में गोवंश हत्या करने का मामला नया नहीं है। पिछले कई वर्षों से गोकशी की शिकायत मिल रही थी। यहां रोजाना दोपहर 12 से 3 बजे तक मंडी लगती है।

कई दिनों तक चला तलाशी अभियान :

आइजी उमेशचंद के नेतृत्व में खैरथल तिजारा एसपी सुरेंद्र सिंह, भिवाड़ी एसपी योगेश दाधीच, किशनगढ़बास डीएसपी सुरेश कुड़ी व तिजारा डीएसपी मुनेश समेत बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों ने रुंध के बीहड़ क्षेत्रों में तलाशी अभियान चलाकर 121 – बाइक व एक पिकअप को जब्त किया है। हालांकि पुलिस के पहुंचने से पहले गो–तस्कर गांव छोड़कर भाग चुके थे। आइजी ने बताया कि मौके से लिए गए नमूने की जांच करवाई जा रही है।

विहिप के नये पदाधिकारियों की घोषणा

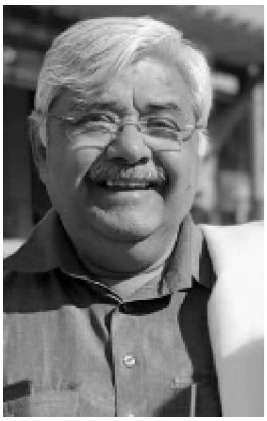

आलोक कुमार जी

बजरंग लाल जी बागड़ा

मिलिंद जी परांडे

विनायक राव जी

अयोध्या। विश्व हिन्दू परिषद की प्रन्यासी मंडल की गत माह आयोजित बैठक में सर्वसम्मती से निम्न नये पदाधिकारियों की घोषणा की गई। अब आलोक कुमार जी को विहिप का अध्यक्ष, बजरंग लाल बागड़ा जी को महामंत्री, मिलिंद जी परांडे को संगठन महामंत्री एवं विनायक राव जी को सह संगठन महामंत्री बनाया गया है।

सीएम मनोहर लाल ने गोपालकों को दी बड़ी सौगात

महेंद्रगढ़, हरियाणा (सरोज यादव/महेश गुप्ता)। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि हरियाणा राज्य अपने पशुधन के कारण न केवल राष्ट्रीय अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक विशिष्ट पहचान रखता है। इसी विशेषता के कारण हरियाणा एकमात्र राज्य बन गया है, जहां देसी गाय के ए–2 पैश्चराइज्ड (पास्तरीकरण) दूध के विपणन का काम शुरू किया गया है।

मुख्यमंत्री गत माह जिला महेंद्रगढ़ के गांव जाट पाली स्थित हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर में चल रही तीन दिवसीय 40वीं राज्य पशुधन प्रदर्शनी–2024 के दूसरे दिन के कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री जय प्रकाश दलाल ने की। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने लकी ड्रा निकालकर विजेताओं के नाम की घोषणा की। उन्होंने **राष्ट्रीय गोपाल रतन पुरस्कार** से प्रदेश के पशुपालक जितेन्द्र सिंह निवासी गिल्लाखेडा (फतेहाबाद) साहीवाल गाय फार्म वर्ष 2022–23 के लिए तथा रामसिंह निवासी नीलोखेडी (करनाल) साहीवाल गाय फार्म 2023–24 के लिए सम्मानित किया। इस मौके पर उन्होंने दूध उत्पादन प्रतियोगिता में प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले पशु मालिक करमबीर निवासी सुनारियां। (कुरुक्षेत्र) मुर्राह 28.62 किलो, बाबूलाल निवासी मुंडी (रेवाड़ी) हरियाणा 17.08 किलो, दूध देने के लिए सम्मानित किया। पशुपालकों को शुभकामनाएं देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरह की प्रदर्शनियों से किसान अपने पशुओं की नस्ल को सुधारने की तरफ प्रोत्साहित होता है। साथ ही नई–नई तकनीक भी सीखता है।

पवित्र-पावन पर्व महाशिवरात्रि एवं होली की सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्रवण कुमार वघेल

(प्रधान प्रतिनिधि) ऊमरी, नगला जैत, चंदौस (उ.प्र.) 202132

गोमाता के लिए प्रति वर्ष पाँच बीघा का भूसा गोशाला को दान करते हैं और जिस जगह कोई भी गोमाता चोटिल मिलती हैं तो स्वयं दवा व पट्टी भी करते-कराते हैं। इस प्रकार सभी व्यक्ति गोमाता-गोवंश की सेवा करें तो कोई भी गोवंश कष्ट में नहीं रहेगा और सेवा करने वाले सभी लोगों पर उनकी कृपा बरसेगी।

पवित्र–पावन पर्व महाशिवरात्रि एवं होली की सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मैं एक गौशाला चलाता हूँ, जिसमें ८० गोवंश है। इन सभी गोवंश के लिए मैं स्वयं दो बीघा अपनी जमीन में हरा चारा उगाता हूँ और गौशाला को दान करता हूँ, जिससे हमारी गोमाता-गोवंश को सूखा भूसा नहीं खाना पड़े। इसके अलावा अपने गाँव में एक रिक्शे के द्वारा हर घर से एक रोटी एवं अन्य वस्तुएं जो मातायें-बहनें देतीं हैं उनको एकत्रित कर गौशाला में भेजता हूं। अन्य सभी गोभक्तों से निवेदन है कि वे अपनी क्षमता के अनुसार तन-मन-धन और समय का दान देकर गोमाता-गोवंश की सेवा करें और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

जय गोमाता की

गिरीश शर्मा
समाज सेवी
ग्राम पंचायत भोजपुर, चंदौस (उ.प्र.)

पवित्र–पावन पर्व महाशिवरात्रि एवं होली की सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जय श्रीराम। गोसेवा करना हर नागरिक का परम धर्म है। गोमाता के पंचगव्य-दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र के सेवन से शरीर के सभी रोगों का निदान किया जा सकता है। इसलिए सभी लोगों से हार्दिक निवेदन है कि वे पंचगव्य का विधि-विधान पूर्वक सेवन अवश्य करें। इसके अलावा गोमाता चारों पुरूषार्थ - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्रदाता भी हैं। अतः सभी लोग तन-मन-धन और समय का दान देकर गोमाता - गोवंश की सेवा-रक्षा हर कीमत पर अवश्य करें और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन को सुखी-समृद्ध बनायें।

जय गोमाता की

सचिन कुमार गौड़
सचिव
ग्राम शाहपुर हरदुआगंज, अलीगढ़

पंडित परमेश्वर भारद्वाज
सचिव
गौ सम्पदा विस्तार ब्रज प्रांत प्रमुख
जिला अलीगढ़

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

ARE INDIGENOUS COWS SPECIFICALLY, STRESS BUSTERS...?

The answer to this question can be said to be Yes to some extent. In Indian cultural scenario, cows in general, have gained an exceptional significance in the society and are considered to be sacred beings in Sanatan Dharma. For many Indians, especially for those following Hindu ideologies, cows are considered to be a very strong source of cultural heritage and tradition. Cows have always been revered in Indian society for centuries and are strongly associated with qualities such as purity, gentleness and motherly love. Also they are frequently used in performing religious rituals and are regarded as an evident representation of the Divine and are manifested as a symbol of wealth and prosperity. Additionally for centuries, cow products such as milk, ghee and dung have been used in almost all the traditional Indian medicine system as well as in various aspects of daily human life.

Indigenous cows especially, have an extremely profound cultural significance undoubtedly. It has indeed been observed that their presence may stir a positive and constructive sense of connection to Indian cultural heritage and tradition in an

individual, which could also contribute to a sense of their progressive well-being altogether.

However, as far as the question of their being a stress buster is concerned, there is no scientific evidence available infact, to authenticate and advocate the statement that the Indigenous cows specifically are stress busters in nature. However, certain studies have explained a universal fact that interacting with some specific domestic animals such as cows etc., can have a calming effect on humans and can reduce stress levels to a considerable extent in an individual. This is quite true because animals in general, actually have the potential and the capability to provide an intense reflective sense of companionship, which can help to alleviate feelings of loneliness and anxiety. In addition, just being in the company of cows or other animals can provide a distraction from stressful or negative contemplations. Scientific explanation reveals that the act of petting or caring for a cow can release oxytocin, a hormone associated with feelings of happiness and bonding which can help to reduce stress levels. Oxytocin is also called the "love hormone" because it is released during social bonding activities like hugging, kissing and sexual intercourse. It is also involved in childbirth, breastfeeding, and maternal behavior. Researchers say that Oxytocin has been shown to increase feelings of trust, generosity, and empathy and may play a role in social bonding and attachment.

Generally the Cows are gentle, non-threatening animals that can provide a deep sense of comfort and relaxation to humans. It is therefore important here to note that the effects of human-interaction with animals on stress levels can obviously vary from person to person and indispensably depend on a variety of factors, such as the individual's personality, the type of animal and the nature of their interaction. Therefore, while some individuals may find their interaction with the Indigenous cows to be a stress buster under specific situations and circumstances but certainly this may not be the case for everyone every time.

Consequently, the significance of Indigenous cows in Indian culture is deeply rooted and has been passed down through generations, contributing to their cultural significance. While cows can have a calming effect on humans it is extremely essential to treat them with full kindness and extreme respect as they are the divine living beings that deserve human attention, care, Love and compassion.

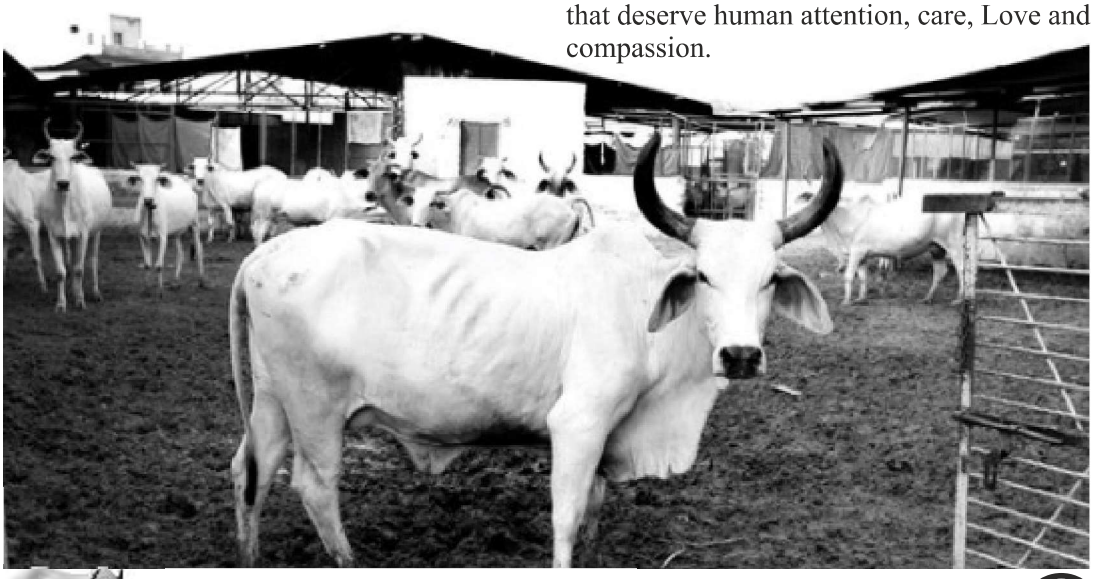

Dr. Aastha Pathak

COW URINE AS A MEDICINE

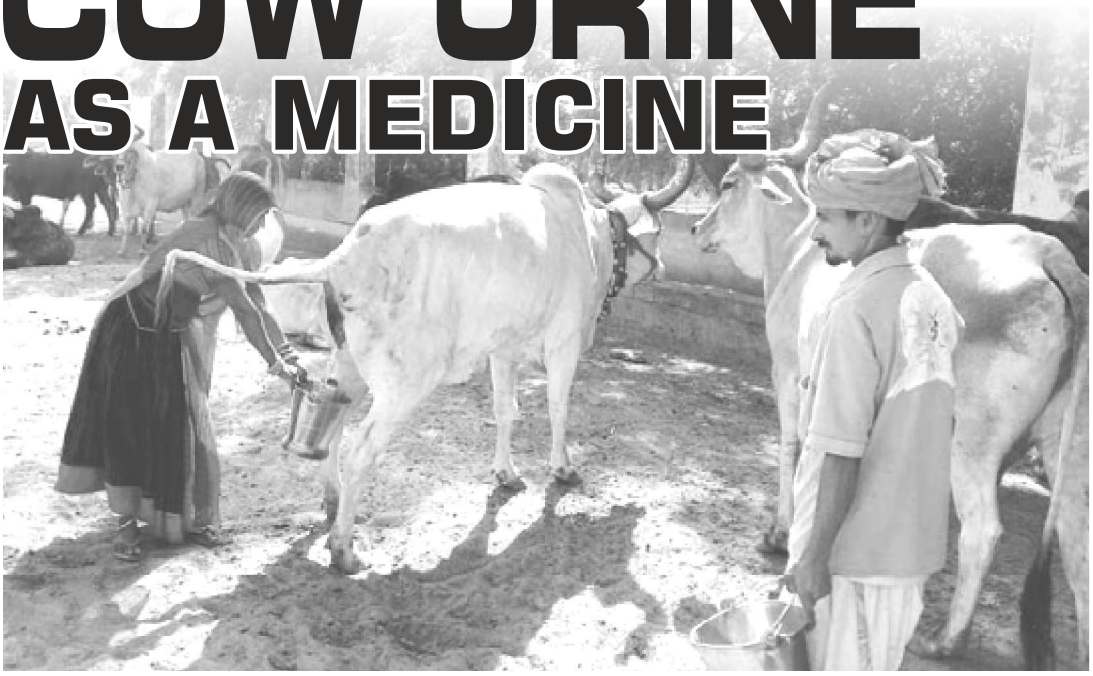

Infectious diseases remain a major threat to the public health despite tremendous progress in human medicine. Emergence of widespread drug resistance to the currently available anti-microbials is a matter of deep concern. A high percentage of nosocomial infections are caused by highly resistant bacteria such as methicillin-resistant Staphylococcus aureus or multidrug-resistant (MDR) Gram-negative bacteria. Each year in the United States, about 2 million people become infected with antibiotic resistant bacteria and at least 23,000 people die every year as a consequence of these infections. Many more people die from other conditions that are complicated by an antibiotic-resistant infection. In 2012, there were about 450000 new cases of MDR tuberculosis. Extensively drug-resistant tuberculosis has been identified in 92 countries. Development of resistance to oral drug of choice fluoroquinolones, for urinary tract infections caused by Escherichia coli is very widespread, often sensitivity remains only for injectables. Infections caused by resistant microorganisms often fail to respond to the standard treatment, resulting in prolonged illness, higher health care expenditures, and a greater risk of death. There is a dire need for the development of new antimicrobial agents with sensitivity intact against micro-organisms. The rational designing of novel drugs from traditional medicines to treat these difficult to treat infections offers a new prospect for the modern health-care system.

Ayurvedic texts (Sushruta Samhita, Ashtanga Sangrah and Bhav Prakash Nighantu) describe cow urine (CU)

(gomutra) as an effective medicinal substance /secretion of animal origin with innumerable therapeutic uses. Cow (Kamadhenu) has been considered as a sacred animal in India. In Rigveda (10/15), CU is compared to nectar. In Susruta (45/221) and in Charak (sloka-100) several medicinal properties of CU have been mentioned such as weight loss, reversal of certain cardiac and renal diseases, indigestion, stomach ache, diarrhea, edema, jaundice, anemia, hemorrhoids and skin diseases including vitiligo. Gomutra is capable of removing all the imbalances in the body, thus maintaining the general health. CU contains 95% water, 2.5% urea, minerals, 24 types of salts, hormones, and 2.5% enzymes. It also contains iron, calcium, phosphorus, carbonic acid, potash, nitrogen, ammonia, manganese, iron, sulfur, phosphates, potassium, urea, uric acid, amino acids, enzymes, cytokine and lactose. CU is an effective antibacterial agent against a broad spectrum of Gram-negative and Gram-positive bacteria and also against some drug-resistant bacteria. It acts as a bio-enhancer of some antimicrobial drugs. It has antifungal, anthelmintic, anti-neoplastic action, is useful in hypersensitivity reactions and in numerous other diseases including increasing the life-span of a person. Recent researches have shown that CU is an immune-enhancer also. Therapeutic properties of CU have been validated by modern science also.

Mechanism of Action of CU

Different fractions of CU possess antimicrobial activity due to the presence of certain components like volatile and nonvolatile ones. Presence of urea, creatinine, swarn kshar (aurum hydroxide), carbolic acid, phenols, calcium, and manganese has strongly explained the antimicrobial and germicidal properties of CU. Presence of amino acids and urinary peptides may enhance the bactericidal effect by increasing the bacterial cell surface hydrophobicity. CU enhances the phagocytic activity of macrophages. Higher amounts of phenols in fresh CU than CU distillate (CUD) makes it more effective against microbes.

After photo-activation, few biogenic volatile inorganic and organic compounds such as CO2, NH3, CH4, methanol, propanol and acetone, and some metabolic secondary nitrogenous products are also formed [18]. Photo-activated CU (PhCU) becomes highly acidic in comparison to fresh CU. An increase in bactericidal action may be due to a

significant decrease in pH, presence of inorganic phosphorus, chlori

After photo-activation, few biogenic volatile inorganic and organic compounds such as CO_2, NH_3, CH_4, methanol, propanol and acetone, and some metabolic secondary nitrogenous products are also formed [18]. Photo-activated CU (PhCU) becomes highly acidic in comparison to fresh CU. An increase in bactericidal action may be due to a significant decrease in pH, presence of inorganic phosphorus, chloride and dimethylamine may also play an important role, along with increased formation of some reactive compounds like formaldehyde, sulfinol, ketones and some amines during photo-activation and long term storage. CU prevents the development of antibacterial resistance by blocking the R-factor, a part of plasmid genome of bacteria.

CU contains phenolic acids (gallic, caffeic, ferulic, o-coumaric, cinnamic, and salicylic acids) which have antifungal characteristics .

Antioxidant property of uric acid and allantoin present in CU correlates with its anticancer effect. CU reduces apoptosis in lymphocytes and helps them to survive better. This action may be due to the free radical scavenging activity of the urine components, and these components may prevent the process of aging. It efficiently repairs the damaged DNA. Daily consumption of CU improves immunity due to the presence of swarn kshar and fastens the wound healing process, which is due to allantoin. CU enhances the immuno-competence by facilitating the synthesis of interleukin-1 and -2, augments B - and T- lymphocyte blastogenesis, and IgA, IgM and IgG antibody titers. Early morning first voided CU is more sterile and have more macro and micronutrients along with other enzyme/urea content could be more effective .

As An Antimicrobial Agent

Antimicrobial activity of CU from both indigenous and hybrid breeds against E. coli, Salmonella typhi, Proteus vulgaris, S. aureus, Bacillus cereus, Staphylococcus epidermidis, Klebsiella pneumonia, Pseudomonas aeruginosa, Pseudomonas fragi, Streptococcus agalactiae, Enterobacter aerogenes, Aeromonas hydrophila, Micrococcus luteus, Streptococcus pyogenes, Streptomyces aureofaciens, Lactobacillus acidophilus and Bacillus subtilis, and Leishmania donovani has been observed in various studies. In these studies the antimicrobial activity of CU was found to be comparable with ofloxacin, ciprofloxacin, ampicillin, chloramphenicol, nalidixic acid, rifampicin, tetracycline, streptomycin, cefpodoxime and gentamycin in different studies.

UPI
BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD
Account Number : 04072010038910, IFSC Code: PUNB0040710
Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना बनेगी श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादक किसानों के लिये वरदान

रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादक किसानों के लिये वरदान साबित होगी। इससे मिलेट्स उत्पादक कृषकों को अपने उत्पादों का उचित दाम मिलेगा, जिससे अन्य किसानों को मिलेट्स उत्पादन के लिये प्रोत्साहन भी मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री बनने के बाद मिलेट्स उत्पादक किसानों के हित में योजना को लागू करने का ऐतिहासिक फैसला लिया। उन्होंने फैसला ही नहीं लिया, बल्कि 3 जनवरी को जबलपुर में हुई पहली ही कैबिनेट में योजना के प्रस्ताव को पारित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के इस निर्णय ने बता दिया कि वे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा डिण्डोरी की मिलेट क्वीन श्रीमती लहरीबाई को सम्मानित करने के फैसले को नजीर मानते हुए प्रदेश को मिलेट प्रदेश बनाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेंगे।

रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में राज्य सरकार, महासंघ द्वारा क्रय किये गये कोदो–कुटकी पर किसानों को भुगतान किये गये न्यूनतम क्रय मूल्य के अतिरिक्त सहायता राशि के रूप में किसानों के खातों में एक हजार रुपये प्रति क्विंटल डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के तहत प्रदाय करेगी। इस योजना के लागू होने से श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादक कृषकों को अधिक से अधिक लाभान्वित करने के लिये उनकी क्षमता संवर्धन, कोदो–कुटकी की विशिष्ट पैकेजिंग एवं

ब्रॉंडिंग गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे कृषकों को बेहतर विपणन व्यवस्था उपलब्ध कराते हुए उत्पादों का उचित मूल्य दिलाने में सहायता मिलेगी। योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये शासन ने पूर्व से संचालित लघु धान्य प्र–संस्करण, विपणन इत्यादि कार्यों में संलग्न एफपीओ/समूह को महासंघ के रूप में संगठित करने के लिये मार्गदर्शी निर्देश जारी किये हैं। योजना से प्रदेश में श्रीअन्न उत्पादन में संलग्न कृषकों, एफपीओ/समूह को राज्य स्तरीय महासंघ के रूप में संगठित कर नवीन तकनीकी के उपयोग से श्रीअन्न, विशेषकर कोदो–कुटकी एवं उसके प्र–संस्कृत उत्पादों को राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान स्थापित कराने में मदद मिलेगी। इससे एफपीओ द्वारा गठित फेडरेशन के माध्यम से श्रीअन्न के लिये वेल्यू चेन विकसित करने और कोदो–कुटकी की खेती में संलग्न कृषकों की आय में वृद्धि करने में मदद मिलेगी।

श्रीअन्न/कोदो–कुटकी के विपणन एवं प्र–संस्करण में कार्यरत एफपीओ महासंघ गठित किया जा रहा है। यह श्रीअन्न के उपार्जन, भंडारण, प्र–संस्करण, ब्रॉण्ड बिल्डिंग एवं उत्पाद विकास आदि कार्य करेगा। कम्पनी अधिनियम–2013 के अंतर्गत कम्पनी के रूप में महासंघ का गठन होगा। योजना के लाभार्थी एफपीओ फेडरेशन के सदस्य होंगे। ये ही सामान्य सभा के सदस्य भी होंगे एवं रोटेशन प्रणाली के आधार पर इनके द्वारा संचालक मण्डल के संचालकों एवं अध्यक्ष का चुनाव किया जायेगा। नवीन एफपीओ को महासंघ में शामिल करने में बोर्ड का निर्णय अंतिम रहेगा। योजना के क्रियान्वयन की नोडल संस्था किसान–कल्याण तथा कृषि विकास को बनाया गया है। मॉनीटरिंग व्यवस्था को पुख्ता करने के लिये विभाग के वरिष्ठगण अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इससे योजना के क्रियान्वयन की उच्चतम स्तर पर बेहतरीन मॉनीटरिंग और समीक्षा होगी। इससे योजना के स्टेक होल्डर्स को लाभान्वित करने की प्रक्रिया में आने वाली दिक्कतों का निराकरण किया जाकर उन्हें अधिक–से–अधिक लाभ प्रदान किया जा सकेगा।

D16368/23

देश का स्पोर्ट्स हब बनता मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश ने राष्ट्रीय स्पोर्ट्स मैप में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। राज्य सरकार के गंभीर प्रयासों, खेल अधोसंरचनाओं में निरंतर विस्तार, प्रशिक्षण के स्तर में गुणवत्तापूर्ण सुधार और खिलाड़ियों के प्रोत्साहन देने के उत्कृष्ट परिणाम हासिल हुए हैं। खेल अकादमियों का संचालन, खेल पुरस्कार, खेलों के लिये विशेष छात्रवृत्ति, पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार और खेल संघों को खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से मध्यप्रदेश देश का स्पोर्टस हब बन गया है। खेल अकादमियों का संचालन योजना अंतर्गत विभाग द्वारा 18 खेलों की 11 अकादमियाँ संचालित की जा रही हैं। खेल अकादमियों एवं फीडर सेन्टर्स में 996 खिलाड़ियों को बोर्डिंग एवं डे–बोर्डिंग योजना अंतर्गत प्रवेश प्रदान कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही हैं। भारत सरकार द्वारा मध्यप्रदेश के 3 खिलाड़ियों यथा शूटिंग खिलाडी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, हॉकी खिलाड़ी सुशीला चानू, केनोइंग–क्याकिंग की पैरा खिलाड़ी प्राची यादव को अर्जुन अवॉर्ड एवं हॉकी ऑलंपियन के

D16368/23

खेलो एम.पी यूथ गेम्स

खेलो इण्डिया यूथ गेम्स–2022 की तर्ज पर मध्यप्रदेश राज्य में खेलो एम.पी यूथ गेम्स–2023 का आयोजन मध्यप्रदेश के सभी जिलों में किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश के 1,20,105 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। यह आयोजन निरंतर प्रतिवर्ष किया जायेगा। भोपाल को स्पोर्ट्स हब तथा मध्यप्रदेश में स्पोर्ट्स टूरिज्म को बढ़ाने के लिये नाथू बरखेडा स्पोर्ट्स साईंस सेन्टर की स्थापना की जा रही है। प्रथम चरण में एथलेटिक्स सिंथेटिक ट्रेक मय फुटबॉल स्टेडियम एवं हॉकी सिंथेटिक टर्फ मय पवेलियन, द्वितीय चरण में "इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स" का निर्माण तथा तृतीय चरण में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण प्रस्तावित है। इसके लिये विभाग द्वारा 985 करोड़ 76 लाख रुपये का व्यय किया जायेगा।

प्रशिक्षक श्री शिवेन्द्र सिंह को द्रोणाचार्य अवार्ड– 2023 से सम्मानित किया गया। मध्यप्रदेश राज्य को 23 साल बाद यह अवसर मिला है, जब मध्यप्रदेश के एक साथ 3 खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड एवं एक प्रशिक्षक को द्रोणाचार्य अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। गोवा में आयोजित 37वे राष्ट्रीय खेल में मध्यप्रदेश के 416 खिलाड़ियों द्वारा 37 खेलों में प्रतिभागिता कर 112 पदक (37–स्वर्ण, 36–रजत, 39–कांस्य) प्राप्त कर पदक तालिका में चौथा स्थान प्राप्त किया गया। यह हमारे खिलाड़ियों का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है।

खेल अधोसंरचना का विस्तार

अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर की खेल अधोसंरचना निर्माण में मध्यप्रदेश राज्य अग्रणी राज्य की श्रेणी में है। मध्यप्रदेश में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 18 हॉकी टर्फ निर्मित हैं तथा 3 हॉकी टर्फ निर्माणाधीन हैं। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 10 एथलेटिक्स सिंथेटिक निर्मित हैं। विभाग के स्वामित्व के 107 स्टेडियम/खेल प्रशिक्षण केन्द्र निर्मित हैं तथा 56 निर्माणाधीन हैं। 37 वर्षों के बाद टोक्यो ओलम्पिक–2020 में मध्यप्रदेश के खेल अकादमियों के खिलाड़ियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन कर 10 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभागिता की गई एवं पुरुष हॉकी में एक कांस्य पदक प्राप्त किया गया। आगामी ओलम्पिक, फ्रांस (पेरिस) गेम्स– 2024 में अकादमी के खिलाड़ी अधिक संख्या में प्रतिनिधित्व कर सकें, इसके लिये खिलाड़ियों को आधुनिक उच्च प्रशिक्षण के लिये विदेशी प्रशिक्षक से विदेश में प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जायेगा तथा विदेशी प्रशिक्षक को भी आमंत्रित किया जायेगा। **माँ तुझे प्रणाम** योजना अंतर्गत माह जून–2023 में मध्यप्रदेश के 909 युवाओं को तनोत माता का मंदिर (राजस्थान), वाघा–हुसैनीवाला (अमृतसर पंजाब), कन्याकुमारी (तमिलनाडु) की अनुभव यात्रा कराई गई। योजना अंतर्गत प्रतिवर्ष 3,000 युवाओं को भ्रमण यात्रा पर भेजने का लक्ष्य रखा गया है। मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग अकादमी भोपाल में विश्व कप (राइफल/पिस्टल), एशियाई शूटगन शूटिंग चैम्पियनशिप और विश्व जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप का आयोजन आगामी माहों में किया जाना प्रस्तावित है।

वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स

मध्यप्रदेश में वन डिस्ट्रिक्ट –वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स योजना शुरू करेंगे। इसके अंतर्गत प्रत्येक जिले में एक स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स का निर्माण किया जायेगा। ब्रेकडांस अकादमी की स्थापना की जा रही है। ई–स्पोर्ट्स अकादमी एवं जिला उज्जैन में मलखम्ब एवं जिम्नास्टिक अकादमी की स्थापना की जाना प्रस्तावित है। मध्यप्रदेश में खेल अधोसंरचना का निर्माण, जन निजी भागीदारी योजना से किया जाना प्रस्तावित है। मध्यप्रदेश के प्रतिभावान खिलाड़ियों का खेल अकादमियों में चयन हो सके, इसके लिये प्रत्येक खेल अकादमी के न्यूनतम 5 फीडर सेंटर स्थापित किये जायेंगे। माह अक्टूबर, 2024 में आयोजित नेशनल गेम्स, उत्तराखण्ड–2024 में मध्यप्रदेश से अधिकाधिक खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभागिता कर पदक अर्जित करने के प्रयास किये जायेंगे।

ओलम्पिक गेम्स–2024 में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों की अधिकाधिक प्रतिभागिता का प्रयास किया जायेगा। पुलिस विभाग में प्रतिवर्ष उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सब इंस्पेक्टर के 10 पद एवं कान्सटेबल के 50 पद पर नियुक्ति की जायेगी। वन डिस्ट्रिक्ट–वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स योजना अंतर्गत भविष्य की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए खेल अधोसंरचना को 4 श्रेणी राजभोगी शहर, संभागीय मुख्यालय, बड़े जिला मुख्यालय, छोटे जिला मुख्यालय में स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स स्थापित करने की कार्य–योजना तैयार की जायेगी। खेल संघों की खेल प्रतियोगिताओं एवं पंजीकृत खिलाड़ियों की जानकारी ऑनलाइन की जायेगी।

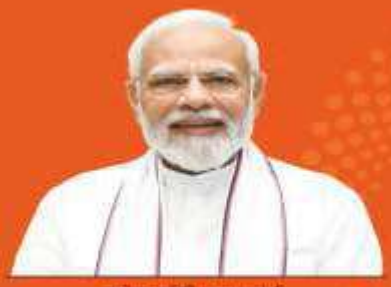

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 मार्च, 2024

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक